आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026
Received: 25/03/2026; Published: 28/03/2026

कविता

गैरज़रूरी बातें

- प्रतिभा मुदलियार

प्रतिभा मुदलियार , गैरज़रूरी बातें , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026,** (158-161)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

कितनी ही गैरज़रूरी बातें

सहेज रखी हैं

दिल और दिमाग की दराज़ों में —

जैसे पुराने काग़ज़,

जिन पर अब कोई दस्तख़त नहीं होते।

तुम्हारे और उसके बारे में भी

वह सब जो बेफ़ज़ूल है।

जानती हूँ

बेहद पक्की, जानकारियाँ

बेवजह सहेजे हूँ।

कहाँ पढ़े हैं,

अब क्या करते हैं,

किससे गहरी दोस्ती है,

कितना कमाते हैं,

क्या पसंद है खाने में...

न जाने क्या क्या..

तथ्यों का एक पुलिंदा है

जिस पर मेरा कोई अधिकार नहीं,

बस स्मृति का जिद्दीपन है।

मेरे भीतर

सूचनाओं ने

एक कमरा ले लिया है

बिना दस्तक,

बिना किराया,

बिना नामपट्ट के।

और विडंबना देखो

सबसे दूर होती हूँ

तो भी हिसाब रखती हूँ

गुज़रती कारों का

फूर्र जाती स्कूटर का

रंग शायद ही याद रखती हूँ

पर हॉर्न की आवाज़ पहचान लेती हूँ।

घर के सामने से गुज़रती औरतों का समय,

फेरीवालों की पुकार,

उनके कदमों की थाप

सब दर्ज है भीतर

मानो मन कोई रजिस्टर हो।

कितनों की कितनी जानकारियाँ

ठहरी हुई हैं मुझमें —

उनकी भी

जिनसे जीवन का

कोई सीधा संबंध नहीं।

शायद

मन स्मृतियों का घर नहीं,

सूचनाओं का गोदाम हो चला है।

जहाँ लोग नहीं रहते,

बस उनकी खबरें रहती हैं...

और हम भ्रम पाल लेते हैं

कि हमने किसी को

याद रखा है,

जबकि सच यह है

हम लोगों को नहीं,

उनकी सूचनाओं को ढ़ोते हैं।

****